[This question paper contains 4 printed pages.]

(30)

Your Roll No 2023..

Sr. No. of Question Paper : 1814 E

Unique Paper Code : 62051404_OC

Name of the Paper : Hindi-'A'

Name of the Course : B.A. (Programme) Hindi- 'A' CBCS

Semester : IV

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY Kalkaji, New Delhi-19

समय : 3 घंटे पूर्णांक : 75

Instructions for Candidates

1. Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.
2. Attempt **all** questions.

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) गनी दोनों हाथों से छड़ी पर जोर देकर झुकता हुआ बोला, 'मेरा हाल पूछो, तो वह खुदा ही जानता है. मेरा चिराग साथ होता तो और बात थी. रक्खे! मैंने उसे समझाया था कि मेरे साथ चला चल. मगर वह अड़ा रहा कि नया मकान छोड़कर कैसे जाऊं यहां अपनी गली है, कोई ख़तरा नहीं है। भोले कबूतर ने यह नहीं सोचा कि गली में ख़तरा न सही, बाहर से तो ख़तरा आ सकता है। मकान की रखवाली के लिए चारों जनों ने जान दे दी. रक्खे! उसे तेरा बहुत भरोसा था. कहता था कि रक्खे के रहते कोई मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता. मगर जब आनी आई, तो रक्खे के रोके न रुक सकी।'

अथवा

मेरे राम का मुकुट भीग रहा है, यह भीतर से कह पाऊँ? अपनी उदासी से ऐसा चिपकाव अपने संकरे-से-दर्द से ऐसा रिश्ता, राम को अपना कहने के लिए केवल उनके लिए भरा हुआ हृदय कहा पाऊं? मैं शब्दों के घने जंगलों में घिर गया हूं। जानता हूं, इन्हीं जंगलों के आसपास किसी टेकड़ी पर राम की पर्णकुटी है, पर इन उलझानेवाले शब्दों के अलावा मेरे पास कोई राह नहीं। शायद सामने उपस्थित अपने ही मनोराज्य के युवराज, अपने बचे-खुचे स्नेह के पात्र, अपने भविष्यत् के संकट की चिंता में राम के निर्वासन का जो ध्यान आ जाता है, उनसे भी अधिक एक बिजली से जगमगाते शहर में एक पढ़ी-लिखी चंद दिनों की मेहमान लड़की के एक रात कुछ देर से लौटने पर अकारण चिंता हो जाती है, उसमें सीता का ख्याल आ जाता है, वह राम के मुकुट या सीता के सिंदूर के भीगने की आशंका से जोड़े न जोड़े, आज की दरिद्र अर्थहीन, उदासी को कुछ ऐसा अर्थ नहीं दे देता, जिससे जिंदगी ऊब से कुछ उबर सके। (10)

(ख) साहब बोले, ''आप हैं बैरागी. दफ्तरों के रीत - रिवाज नहीं जानते. असल में भोलाराम ने गलती की! भई, यह भी मन्दिर है, यहाँ भी दान-पुण्य करना पडता है, भेंट चढानी पड़ती आप भोलाराम के आत्मीय मालूम होते हैं. भोलाराम की दरख्वास्तें उड़ रही हैं, उन पर वजन रखिए''. नारद ने सोचा कि फिर यहाँ वजन की समस्या खड़ी हो गई। साहब बोले, ''भई, सरकारी पैसे का मामला है. पेन्शन का केस बीसों दफ्तरों में जाता है. देर लग जाती है. हजारों बार एक ही बात को हजारों बार लिखना पड़ता है, तब पक्की होती है। हाँ, जल्दी भी हो सकती है, मगर ''साहब रूके. नारद ने कहा, ''मगर क्या ?'' साहब ने कुटिल मुस्कान के साथ कहा, ''मगर वजन चाहिए। आप समझे नहीं, जैसे आप की यह सुन्दर वीणा है, इसका भी वजन भोलाराम की दरख्वास्त पर रखा जा सकता है। मेरी लड़की गाना सीखती है, यह मैं उसे दे दूंगा साधुओं की वीणा के अच्छे स्वर निकलते हैं, लड़की जल्दी संगीत सीख गई तो शादी हो जाएगी।

अथवा

पृथ्वी के उच्छवास के समान उठते हुए धुंधलेपन में वे कच्चे पर आकंठ -मग्न हो गए थे केवल फूस के मटमैले और खपरैल के कत्थई और काले छप्पर, वर्षा में बढ़ी गंगा के मिट्टी जैसे जल में पुरानी नावों के समान जान पड़ते थे। कछार की बालू में दूर तक फैले तरबूज और खरबूजे के

खेत अपनी सिर की और फूस के मुठ्ठियों, टट्टियों और रखवाली के लिए बनी पर्णकुटियों के कारण जल में बसे किसी आदिम द्वीप का स्मरण दिलाते थे। उनमे एक-दो दीए जल चुके थे, तब मैंने दूर पर एक छोटा-सा काला धब्बा आगे बढ़ता देखा । वह धीसा ही होगा, यह मैंने दूर से ही जान लिया। आज गुरु साहब को उसे विदा देना है, यह उसका नन्हा हृदय अपनी पूरी संवेदना - शक्ति से जान रहा था, इसमें संदेह नहीं था । परन्तु उस उपेक्षित बालक के मन में मेरे लिए कितनी सरल ममता और मेरे बिछोह की कितनी गहरी व्यथा हो सकती है, यह जानना मेरे लिए शेष था ।

(10)

2. हिन्दी नाटक की विकास यात्रा को स्पष्ट कीजिए ।

अथवा

कहानी की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए । (12)

3. पुरस्कार कहानी की मूल संवेदना को स्पष्ट कीजिए ।

अथवा

'मैं हार गई' कहानी के प्रमुख चरित्रों का चरित्र चित्रण कीजिए। (12)

4. 'नाखून क्यों बढ़ते हैं' निबंध का प्रतिपाद्य लिखिए ।

अथवा

'उत्साह' निबंध का तात्विक विवेचन कीजिए। (12)

5. 'अंधेर नगरी' की मूल संवेदना पर विचार कीजिए ।

अथवा

भोलाराम का जीव में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए। (12)

6. किसी एक विषय पर टिप्पणी लिखिए। (7)

(क) नयी कहानी

(ख) रेखाचित्र

(ग) व्यंग्य

[This question paper contains 2 printed pages.]

(31)

Your Roll No. 2023

Sr. No. of Question Paper	:	**3248**	**E**
Unique Paper Code	:	62051404	
Name of the Paper	:	Hindi-A	
Name of the Course	:	**B.A. Prog.**	
Semester	:	IV	

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY Kalkaji, New Delhi

Duration : 3 Hours

Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित की सप्रसंग की व्याख्या कीजिए : (10, 10)

(क) लाहौर से आए हुए मुसलमानों में काफी संख्या ऐसे लोगों की थी, जिन्हें विभाजन के समय मजबूर होकर अमृतसर छोड़कर जाना पड़ा था। साढ़े सात साल में आए अनिवार्य परिवर्तनों को देखकर कहीं उनकी आँखों में हैरानी भर जाती और कहीं अफसोस घिर आता - वल्लाह । कटरा जयमल सिंह इतना चौड़ा कैसे हो गया? क्या इस तरफ के सब के सब मकान जल गए ? ...यहाँ हकीम आसिफ अली की दुकान थी ? अब यहाँ एक मोची ने कब्जा कर रखा है।

अथवा

हारकर उसने मजदूरी करना शुरू कर दिया। जमींदार की नई-हवेली बन रही थी, वह उसी में ईंटें ढोने का काम करने लगा। जैसे-जैसे वह सिर पर ईंट उठाता, उसके अरमान नीचे को धसकते जाते। मैंने लाख उसे यह काम न करने के लिए कहा, पर वह अपनी माँ - बहन की आड़ लेकर मुझे निरुत्तर कर देता। मुझे उस पर कम क्रोध नहीं था। फिर भी मुझे भरोसा था, क्योंकि बड़ी-बड़ी प्रतिभाओं और गुणों को मैंने उसकी घुट्टी में पिला दिया था। हर परिस्थिति में वे अपना रंग दिखलाएँगे। यह सोचकर ही मैंने उसे उसके भाग्य पर छोड़ दिया और तटस्थ दर्शक की भाँति उसकी प्रत्येक गतिविधि का निरीक्षण करने लगी।

(ख) कहते है, दुनिया बड़ी भुलक्कड़ है, केवल उतना ही याद रखती है, जितने से उसका स्वार्थ सधता है। बाकी को फेंककर आगे बढ़ जाती है। शायद अशोक से उसका स्वार्थ नहीं सधा। क्यों उसे वह याद रखती । सारा संसार स्वार्थ का अखाड़ा ही तो है।

अथवा

''वह समस्या तो कब की हल हो गई। नरक में पिछले सालों में बड़े गुणी कारीगर आ गए हैं। कई इमारतों के ठेकेदार हैं जिन्होंने पूरे पैसे लेकर रद्दी इमारतें बनाईं। बड़े-बड़े इंजीनियर भी आ गए हैं जिन्होंने ठेके दारों से मिलकर पंचवर्णीय योजनाओं का पैसा खाया। ओवयसीयर हैं, जिन्होंने उन मजदूरों की हाजिरी भरकर पैसा हड़पा जो कभी काम पर गए ही नहीं । इन्होंने बहुत जल्द नरक में कई इमारतें तान दी है।

2. हिंदी गद्य के उद्‌भव के कारणों पर संक्षेप में एक लेख लिखिए ।

अथवा

स्वातंत्र्योत्तर नाटक के विकास का संक्षिप्त परिचय दीजिए. (12)

3. 'मलबे का मालिक' कहानी के शीर्षक की सार्थकता पर विचार कीजिए।

अथवा

'जुलूस' कहानी का सार अपने शब्दों में लिखिए। (12)

4. 'अशोक के फूल' निबंध के आधार पर अशोक के वृक्ष की विशेषताएँ बताइए।

अथवा

'रहिमन पानी राखिए' निबंध का सार लिखिए। (12)

5. 'अंधेर नगरी' नाटक की विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'चीड़ों पर चांदन'' यात्रा-वृत्तांत में लेखक ने प्राकृतिक सुषमा का वर्णन किया है-इस कथन की समीक्षा कीजिए । (12)

6. एक पर टिप्पणी लिखिए : (7)

(क) प्रेमचंदयुगीन कहानी

(ख) यात्रा वृतांत

[This question paper contains 4 printed pages.]

(32) Your Roll No. 2023

BELABANDHU COLLEGE LIBRARY KALKAJI, NEW DELHI

Sr. No. of Question Paper : 3249

E

Unique Paper Code : 62051412

Name of the Paper : Hindi Language and Literature

Name of the Course : **B.A. (Programme) Hindi-B-CBCS**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

Instructions for Candidates

छात्रों के लिए निर्देश

1. Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.

   इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. All questions are compulsory.

   सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. कहानी के उद्‌भव तथा विकास पर प्रकाश डालिए।

अथवा

P.T.O.

संस्मरण के विकासक्रम का सामान्य परिचय दीजिए। (12)

2. 'चीफ की दावत' कहानी का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

अथवा

कहानी कला की दृष्टि से 'बूढ़ी काकी' कहानी की समीक्षा कीजिए। (12)

3. धर्मवीर भारती कृत 'ठेले पर हिमालय' की मूल संवेदना पर विचार कीजिए।

अथवा

'सदाचार का ताबीज' निबंध में वर्णित व्यंग्य की विवेचना कीजिए। (12)

4. 'बिबिया' में चित्रित स्त्री समस्या पर प्रकाश डालिए।

अथवा

प्रहसन और व्यंग्य की दृष्टि से 'अंधेर नगरी' की समीक्षा कीजिए। (12)

5. निम्नलिखित प्रसंगों की व्याख्या कीजिए :- (10 + 10)

(क) रात के ग्यारह बज चुके थे। रूपा आँगन में पड़ी सो रही थी। लाड़ली की आँखों में नींद न आती थी। काकी को पूरियाँ खिलाने

की खुशी उसे सोने न देती थी। उसने गुड़ियों की पिटारी सामने ही रखी थी। जब उसे विश्वास हो गया कि अम्मा सो रही है, तो वह चुपके से उठी और विचारने लगी - कैसे चलूँ? चारों ओर अंधेरा था। केवल चूल्हों में आग चमक रही थी और चूल्हों के पास एक कुत्ता लेटा हुआ था।

अथवा

पच्चीस वर्ष बीत गए। अब लहना सिंह नं. 77 राइफल्स में जमादार हो गया है। उस आठ वर्ष की कन्या का ध्यान भी न रहा। न मालूम वह कभी मिली थी, या नहीं। सात दिन की छुट्टी लेकर ज़मीन के मुकदमे की पैरवी करने वह अपने घर गया। वहाँ रेजीमेंट के अफसर की चिट्ठी मिली कि मैं और बोधसिंह भी लाम पर जाते हैं। लौटते हुए हमारे घर होते जाना। साथ चलेंगे । सूबेदार का गाँव रास्ते में पड़ता था और सूबेदार उसे बहुत चाहता था।

(ख) आज से पचास साल पहले रेल कहाँ थी। मैंने मारवाड़ से मिरजापुर तक और मिरजापुर से रानीगंज तक कितने ही फेरे किए हैं। महीनों तुम्हारे पिता के पिता तथा उनके भी पिताओं का घर-बार मेरी ही पीठ पर रहता था। जिन स्त्रियों ने तुम्हारे बाप और बाप के भी बाप को जना है वह सदा मेरी पीठ को ही पालकी समझती थीं। मारवाड़ में मैं सदा तुम्हारे द्वार पर हाजिर रहता था, पर यहाँ वह मौका कहाँ?

अथवा

कोकिल बायस एक सम, पण्डित मूरख एक।
इन्द्रायन दाड़िम विषय, जहाँ न नेकु विवेक।।
बसिए ऐसे देस नहिं, कनक-वृष्टि जो होय।
रहिए तो दुख पाइए, प्रान दीजिए रोय।।

6. निम्नलिखित में से किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए :- (7)

(क) शुक्लयुगीन निबंध

(ख) भारतेन्दु युग और नाटक विधा

(ग) प्रेमचन्द युगीन कहानी

[This question paper contains 4 printed pages.]

(33) Your Roll No. 2023

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY KALKAJI, NEW DELHI

Sr. No. of Question Paper : 3250 E

Unique Paper Code : 62051413

Name of the Paper : हिंदी गद्य का उद्भव और विकास, हिंदी 'ग'

Name of the Course : **BA (P) HINDI CBCS**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. **सभी** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. किन्हीं **दो** गद्यांशो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10×2=20)

(क) नौकर रखना कई कारण से बहुत जरुरी हो गया था। मेरे सभी भाई और रिश्तेदार अच्छे ओहदों पर थे और उन सभी के यहां नौकर थे। मैं जब बहन की शादी में घर गया तो वहां नौकरों का सुख देखा। मेरी दोनों भाभियां रानी की तरह बैठकर

P.T.O.

चारपाइयां तोड़ती थीं, जबकि निर्मला को सवेरे से लेकर रात तक खटना पड़ता था। मैं ईर्ष्या से जल गया। इसके बाद नौकरी पर वापस आया तो निर्मला दोनों जून 'नौकर चाकर' की माला जपने लगी। उसकी तरह अभागिन और दुखिया स्त्री और भी कोई इस दुनिया में होगी?

(ख) सच्चे वीर पुरुष धीर, गंभीर और आजाद होते हैं। उनके मन की गंभीरता और शांति समुद्र की तरह विशाल और गहरी, या आकाश की तरह स्थिर और अचल होती है। वे कभी चंचल नहीं होते। रामायण में वाल्मीकि जी ने कुंभकरण की गाढ़ी नींद में वीरता का एक चिह्न दिखलाया है। सच है, सच्चे वीरों की नींद आसानी से नहीं खुलती। वे सत्वगुण के क्षीर-समुद्र में ऐसे डूबे रहते हैं कि उनको दुनिया की खबर ही नहीं होती। वे संसार के सच्चे परोपकारी होते हैं।

(ग) विज्ञान धीरे-धीरे इस ओर कदम बढ़ा भी रहा है। कम से कम इतना तो वह तुरंत कर ही देगा कि गेहूं इतना पैदा हो कि जीवन की अन्य परमावश्यक वस्तुएँ - हवा पानी की तरह इफरात हो जायें। बीज, खाद, सिंचाई, जुताई के ऐसे तरीके और किस्म, आदि तो निकलते ही जा रहे हैं, जो गेहूं की समस्या को हल कर दें। प्रचुरता-शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाले साधनों की प्रचुरता की ओर आज का मानव प्रवाहित हो रहा है।

(घ) उसने दोनों हाथों से कानों को दबा लिया। वह तेजी से सिर को घुमाने लगा। उसे लग रहा था, जैसे वह संज्ञा खोता जा रहा है। उसके सामने न नहर है, न पानी। बस, उसके पिता की मूर्ति है। इतनी विशाल कि उसने धरती और आसमान सबको ढक रखा है। उसके नेत्रों में स्वर्णिम भविष्य झांक रहा है। उसके एक हाथ में फावड़ा है, दूसरे में अन्न। उसके शरीर से शुभ्र श्वेत जल झर रहा है और उसी से नहर भरती आ रही है, भरती आ रही है....

2. (क) हिंदी कहानी की विकास यात्रा को संक्षेप में बताइये। (12)

अथवा

हिन्दी नाटक की विकास यात्रा का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

(ख) 'दो बैलों की कथा' कहानी का सार लिखिए। (12)

अथवा

'बहादुर' कहानी की मूल संवेदना लिखिए।

(ग) बालकृष्ण भट्ट द्वारा लिखित निबन्ध 'साहित्य जन समूह के हृदय का विकास है' का प्रतिपाद्य लिखिए। (12)

अथवा

'सच्ची वीरता' में निबंधकार का संदेश बताइए।

(घ) घीसा का चरित्र आपको कैसा लगा? लिखिए। (12)

अथवा

'गंगा स्नान करने चलोगे' संस्मरण का सार प्रस्तुत कीजिए।

3. निम्नलिखित में से किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए: (7)

(क) प्रेमचन्दयुगीन कहानी

(ख) भारतेन्दु युगीन निबन्ध

(ग) संस्मरण की विशेषताएँ

[This question paper contains 8 printed pages.]

(34) Your Roll No. 2023

Sr. No. of Question Paper : 3412 **E**

Unique Paper Code : 62054408

Name of the Paper : Anya Gadya Vidhaein (DSC)

Name of the Course : **B.A. (Prog.)**

Semester : IV

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY Kalkaji, New Delhi-19

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. 'साहित्य का उद्देश्य' निबन्ध का प्रतिपाद्य बताइए। (12)

अथवा

'भाषा, संस्कृति और राष्ट्रीयता' निबन्ध का सार लिखिए।

P.T.O.

2. 'भक्तिन' का चरित्र-चित्रण कीजिए। (12)

अथवा

अदम्य जीवन में लेखक ने बंगाल के अकाल का सजीव चित्रण किया है। प्रकाश डालिए।

3. वैष्णव जन पाठ का उद्देश्य लिखिए। (12)

अथवा

शायद एकांकी के नामकरण की सार्थकता सिद्ध करते हुए उसकी मूल संवेदना बताइए।

4. 'उखड़े खंभे' पाठ का कथानक संक्षिप्त में लिखिए। (12)

अथवा

'लक्खा बुआ' का उद्देश्य बताइए।

5. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए: (7×2=14)

(क) लक्खा बुआ की शादी हुई लेकिन ससुराल गई ही नहीं। ससुराल के लिए घर से चलीं। लेकिन पहुँची नहीं। कई बार शादी हुई। कई बार घर से दूल्हे के साथ ससुराल के लिए निकलीं। पहुँची एक बार भी नहीं। गाँव से बसहर कदम्ब पेड़ के नीचे डोली उतारते ही बिस्कोहर के लौंडे पहुँच जाते। ससुराल वालों को मार-पीट कर भागा देते। लक्खा को लौटा लाते। लक्खा पुराने दिलगीरों को 'ना' नहीं कर पातीं। मुहल्ला फिर से आबाद, बिस्कोहरी भाषा में जगजिवार हो जाता।

(ख) जीवन के दूसरे परिच्छेद में भी सुख की अपेक्षा दुःख ही अधिक हैं। जब उसने गेहुँए रंग और बटिया जैसे मुखवाली पहली कन्या के दो संस्करण और कर डाले तब सास और जेठानियों ने ओठ बिचका कर उपेक्षा प्रकट की। उचित भी था, क्योंकि सास तीन-तीन कमाऊ वीरों की विधात्री बनकर मचिया के ऊपर विराजमान पुरखिन के पद पर अभिषिक्त हो चुकी थी और दोनों

जिठानियाँ काकभुशुण्डी जैसे काले लालों की क्रमबद्ध सृष्टि करके इस पद के लिए उम्मीदवार थीं। छोटी बहू के लीक छोड़कर चलने के कारण उसे दण्ड मिलना आवश्यक हो गया।

(ग) गर्व से मेरी छाती फूल उठी। कौन कहता है कि बंगाल मर गया हैं? जहाँ भूख और बीमारियों से लड़कर भी मनुष्यों के बालकों में क्रांति की चिरजीवी रखने का अपराजित साहस है, वह राष्ट्र कभी भी नहीं मर सकेगा। हड्डी-हड्डी से लड़ने वाले या योद्धा जीवन की महान शक्ति को अभी तक अपने में जीवित रख सके हैं, संसार कहता है, स्टालिनग्राड में लोग खँडहरों में से लड़े थे और उन्होंने दुश्मन के दाँत-खट्टे कर दिए। उन्होंने बर्बरता की धारा को रोककर रूस को गुलाम होने से बचा दिया। किन्तु मैं पूछता हूँ, क्या शिद्धिरगंज दूसरा स्टालिनग्राड नहीं? मनुष्य भूख से तड़प-तड़पकर यहाँ जान दे चुके हैं, वे भीषण रोगों का शिकार हो चुके हैं।

(घ) यह उपलब्धि जो चरम मुक्ति और चरम निर्वाण ही हैं, वैष्णवजन को ही प्राप्त हो सकती है। उस वैष्णव जन के दर्शन से 71 पीढ़ियाँ तर जाती हैं क्योंकि वहीं तो शुद्ध हृदय वाला ही ईश्वर और मनुष्य से प्रेम कर सकता हैं उसके लिए इस भावना से बढ़कर मूल्यवान और कुछ नहीं कि हमने किसी दूसरे के दुख में हिस्सा बटाया। अहंकाररहित, भला करने के अभिमान से शून्य, पूर्ण दयालुता ही धर्म का सर्वोच्च रूप है।

6. निम्नलिखि गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (7+6=13)

(क) रो रही हो और कहती हो, रो नहीं रही... अरे, तो जिन्दगी कटती ही इस तरह से है! पर हम कहते...हैं....फिर भी... (सोचता हुआ) कोई ऐसी चीज जिन्दगी में होनी जरूर चरूर चाहिए जो...।

स्त्री पल्ले से मुँ ह साफ करके स्वस्थ हो जाती है।

स्त्री : क्या कह रहे थे तुम?

पुरुष : ...जो आदमी को रोज-राज एक नया उत्साह दे और... जो है, इसमें कुछ नहीं है।

अथवा

महात्मा जी ने इस तर्क को स्वीकार नहीं किया। कहा, मैं सत्य के अतिरिक्त किसी और राह से स्वराज्य नहीं चाहता। चौरीचौरा और बम्बई में जो कुछ हुआ, उससे स्पष्ट हो गया कि देश अभी सत्याग्रह के लिए तैयार नहीं है। स्वाधीनता कभी किसी के हाथ से दान की तरह नहीं ली जाती है। लेने पर वह टिकती भी नहीं, इस प्रकार, उसे हृदय के रक्त से प्राप्त करना होता है। अहिंसा की कीमत पर मैं भारत के लिए स्वाधीनता लेना स्वीकार नहीं करूँगा बिना अहिंसा के भारत स्वाधीनता नहीं ग्रहण करेगा।

(ख) हालाँकि भारत एक बहुभाषी, बहुधर्मी देश होने के साथ-साथ सामाजिक-सांस्कृतिक विविधताओं और विषमाताओं वाला देश है जो भाषा क्षेत्र, धर्म सम्प्रदाय और जातियों में विभकत है। बहुलता

और विषमतावादी संस्कृति के चलते यहाँ 'हम' की भावना का पर्याप्त आभाव देखने को मिलता है। किन्तु इस सबके बावजूद देश के लोगों में भाषात्मक एकता दिखाई देती है और इसका आधार हिन्दी भाषा है। जहाँ हिन्दी में लोक प्रचलित शब्दों और मुहावरों को अंगीकार करने का गुण या शक्ति है और इसके द्वारा उसने स्वयं को समृद्ध और स्वीकार्य बनाया है अर्थात् उसकी संस्कृति जुड़ने और जोड़ने की संस्कृति रही है, वहीं संस्कृत में यह गुण नहीं है, उसकी संस्कृति उजाड़ने की नहीं तोड़ने की रही है।

अथवा

यह भी इसी के प्रगट होता है। प्राचीन भारत जिस समय उन्नति की दशा में था और जातीयता का यहाँ पूर्ण प्रादुर्भाव था उस समय अवश्य संस्कृत देश भर की एक भाषा वैसे ही रही जैसी अब अंग्रेजी यहाँ होती जाती है। पीछे प्राकृत ने जोर पकड़ा जो

एक समय ग्रामीण और नीच लोगों की भाषा थी और मंजते-मंजते यहाँ तक पुष्ट पड़ गई कि संस्कृत को दबा लिया और अनेक भेद उसके हो गए और भेद होने के साथ ही देश में जातीयता को भी टुकड़े-टुकड़े कर डाला।

[This question paper contains 8 printed pages.]

35 Your Roll No. 2023

Sr. No. of Question Paper : 3463 **E**

Unique Paper Code : 62054408

Name of the Paper : Anya Gadya Vidhaein (DSC)

Name of the Course : **B.A. (Prog.)**

Semester : IV

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY Kalkaji, New Delhi-19

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. जातीयता के गुण निबंध का सार लिखिए। (12)

अथवा

प्रेमचंद ने साहित्य के क्या-क्या उद्देश्य बताए हैं। प्रकाश डालिए।

2. भक्तिन का प्रतिपाद्य लिखिए। (12)

अथवा

'अदम्य जीवन' रिपोर्ताज का उद्देश्य बताइए।

3. लेखक के अनुसार वैष्णव जन की क्या-क्या विशेषताएँ होती हैं। लिखिए। (12)

अथवा

'शायद' एकांकी के पात्रों (स्त्री और पुरुष) का चरित्र-चित्रण कीजिए।

4. 'उखड़े खंभे' पाठ में निहित व्यंग्य को बताइए। (12)

अथवा

'लक्खा बुआ' की चारित्रिक विशेषताएँ सोदाहरण लिखिए।

5. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए: (7×2=14)

(क) आधुनिक साहित्य में वस्तुस्थिति-चित्रण की प्रवृति इतनी बढ़ रही है कि आज की कहानी यथासम्भव प्रत्यक्ष अनुभवों की सीमा के बाहर नहीं जाती। हमें केवल इतना सोचने से ही सन्तोष नहीं होता कि मनोविज्ञान की दृष्टि से सभी पात्र मनुष्यों से मिलते-जुलते हैं, बल्कि हम यह इत्मीनान चाहते हैं कि वे सचमुच के मनुष्य हैं, और लेखक के यथा संभव उनका जीवन-चरित्र ही लिखा है क्योंकि कल्पना के गढ़े हुए आदमियों में हमारा विश्वास नहीं हैय उनके कार्यों और विचारों से हम प्रभावित नहीं होते। हमें इसका निश्चय हो जाना चाहिए कि लेखक ने जो सृष्टि की है, वह अप्रत्यक्ष अनुभवो के आधार पर की गई है और अपने पात्रों की जबान से वह खुद बोल रहा है।

(ख) शास्त्र का प्रश्न भी भक्तिन अपनी सुविधा के अनुसार सुलझा लेती है। मुझे स्त्रियों का सिर घुटाना अच्छा नहीं लगता, अतः मैंने भक्तिन को रोका। उसने अकुण्ठित भाव से उत्तर दिया कि शास्त्र में लिखा है। कुतूहलक् मैं पूछ ही बैठी क्या लिखा है? तुरन्त उत्तर मिला 'तीरथ गए मुंडाये सिद्ध'। कौन से शास्त्र का

यह रहस्यमय सूत्र है, यह जान लेना मेरे लिए सम्भव ही नहीं था। अतः मैं हार का गौन हो रही और भक्तिन का चूड़ाकर्म हर बृहस्पतिवार को, एक दरिद्र नापित के गंगाजल से धुले अस्तुरे यथाविधि निष्पन्न होता रहा।

(ग) वास्वत में हमें कोई भी रोता नहीं दिखा। सब मानो अपने-अपने काम में लगे थे। मैंने देखा, डॉक्टर चुपचाप घरों की ओर देख रहा है। बाँस के सुंदर-सुंदर झोंपड़े! सदियों से बंगाल-हम लोगों-पर बार-बार बाहरी हमले होते रहे; मगर आक्रमणकारी कभी भी यहाँ की शस्य-स्यामला पवित्र भूमि को नहीं रौंद सके। यहाँ मनुथ को इतना समय मिल चुका था कि वह बैठकर इतने आराम से इतने सुंदर और स्वच्छ घर बना सकता। और आज वहीं घर निर्जनता की अर्गला लगाए मूक खड़े थे! अकाल ने उन पर अपनी जो वीभत्स छाया डाल थी, उसका धुँधलका अभी तक भी मनो कनों में छिपा बैठा था।

(घ) विशेषज्ञ ने निवेदन किया, "सरकार, मैं विशेषज्ञ हूँ और भूमि तथा वातावरण की हलचल का अध्ययन करता हूँ। मैंने परीक्षण के

द्वारा पता लगाया कि जमीन के नीचे एक भयंकर विद्युत-प्रवाह घू रहा है। मुझे यह भी मालूम हुआ कि आज वह बिजली हमारे शहर के नीचे से निकलेगी। आपको मालूम नहीं हो रहा है पर मैं जानता हूँ कि इस वक्त हमारे नीचे से भयंकर बिजली प्रवाहित हो रही हैं यदि हमारे बिजली के खम्भे जमीन में गड़े रहते तो वह बिजली स्वम्भों के द्वारा ऊपर आती और उसकी टक्कर अपने पावहाउस की बिजली से होती। तब भयंकर विस्फोट होता। शहर पर हजारों बिजलियाँ एक साथ गिरतीं। तब न एक प्राणी जीवित बचता, न एक इमारत खड़ी रहती।"

6. निम्नलिखि गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (7+6=13)

(क) एक-दो राज्यों में संस्कृत को दूसरी, तीसरी राजभाषा का दर्जा भी प्राप्त गया है। जिस भाषा को मुट्ठी भर लोगों को छोड़कर आज कोई जानता-समझता नहीं उस पर इतना जोर देने का क्या औचित्य है? यथार्थ में एक मृत और अप्रसांगिक भाषा को जबरन जिन्दा करने की यह कोशिश उसी वर्ण वर्चस्वता की

भावना की द्योतक है जिसके चलते दलितों को पहले सहस्त्राब्दियों तक जबरन शिक्षा से वंचित रखकर और फिर अयोग्य घोषित करके शासन-सत्ता हर जगह से दूर रखा गया।

अथवा

वेद पढ़ने से, वर्णाश्रम धर्म का पालन करने से, कण्ठी पहनने से अथवा तिलक लगाने से कोई वैष्णव जन नहीं होता। यह सब पाप के मूल हो सकते हैं। पाखण्ड़ी भी माला पहन सकता हैं, तिलक लगा सकता है, वेद पढ़ सकता है, मुख से राम-नाम का जाप कर सकता है। लेकिन पाखण्डी रहते हुए सत्याचरणी नहीं बना जा सकता। पाखण्डी पर-पीड़ा का निवारण नहीं कर सकता और पाखण्ड के रहते हुए चंचल चित्त को निवल नहीं रखा जा सकता।

(ख) "राम ने सीता को बनोबास दे दिया। लच्छमन, भरत, शत्रुधन, हनुमान, रानी कौसेला रोवैं। विरई चिरगुन रोवैं। हुआँ लव-कुस भए। वाल्मीकि ने सिखाया-पढ़ाया। सीता मैया ने लड़कों को

समझाया-चारों दकिओं में जाना अवधपुरी न जाना लेकिन भाग का लेखा कौन मिटावै। लव-कुस ने लड़ाई में हनुमान, भरत, लच्छमन सबको जीत लिया। आखिर में राजा राम आए। तब सीता मै"या अनर्थ जानकर दौड़ी-दौड़ी आईं। खुसी भी थी कि लड़कों ने बा पके भाइयों को हरा दिया। राम ने पहचान कर पकड़ने की कोसिस की तो माख के मारे धरती माँ से बोलीं-माई अब ई दिन ना दिखाओ। जिसने भारी पाँव घर से निकाल दिया।"

अथवा

तीसरी श्रेणी के वे हैं जो ऐसे स्थान में रहते हैं, जहाँ गर्मा और सर्दी दोनों समान भाव से होती हैं। छः ऋतुओं का समय-समय प्रकाश होता है। वहाँ की धरती उर्वर प्राकृतिक दृश्य वैचित्रय की अधिकाई से सुशोभित रहती है। ऐसा देश प्राचीन भारत, प्राचीन ग्रीस और प्राचीन इटली तथा मिसिर देश हैं। इनमें ग्रीस और इटली अपनी अवनति देख ठीक समय में उससे छुटकारा पाने का यत्न कर शीघ्र अपनी उन्नति की दशा को पहुँच गए किंतु भारत के भाग्य में क्या बदा है सो कुछ जाना नहीं जाता।

शताब्दी पर शताब्दी बीती जाती है किंतु इसके दुभाग्य की दशा में कुछ अदल-बदल नहीं होते दिखती। जैसी अचेत दशा में भारत पड़ा सो रहा है उससे बोध होता है मानो इसकी नाड़ी में जीवनी-शक्ति है ही नहीं इसमें कुछ भी दम होता तो अवश्य उठने की चेष्टा करता।